"साँच कहना, काहु न रुचे"

श्रीमती कंचन आहूजा—जयपुर

आज के इस कलयुग में प्रत्येक व्यक्ति सत्य कहने और सत्य सुनने से हिचकिचाता है और घबराता है। परन्तु विज्ञान और बुद्धि विकास के कारण प्रत्येक व्यक्ति सत्य से परिचित है और वह अच्छी तरह से जानता है कि क्या सही है और क्या गलत है। फिर भी सत्य को कहने में डरता है और अक्सर ये कहते सुना जाता है कि हमें क्या लेना है-जैसे चलता है ठीक है। सही बात कहकर क्यों मुसीबत मोल लें क्योंकि वह जानते हैं कि दुनियाँ के स्वार्थी लोग कभी सत्य को जाहिर नहीं होने देंगे और सत्य को जाहिर करने वाले को अनेक कष्टों और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। इसलिए साधारण व्यक्ति अपने आपको मुसीबत में डालना नहीं चाहता। इसलिए सत्य को समझते हुए भी चुप बैठे रहते हैं, परन्तु सत्य कभी छिपता नहीं और सत्य के अंग उसको जाहिर करके ही रहते हैं। फिर उसके लिए इन्हें चाहे कितने कष्ट उठाने पड़े वे कभी घबराते नहीं, डरते नहीं और सत्य को जाहिर करके ही रहते हैं फिर चाहे उन्हें कोई भी कीमत चुकानी पड़े। यहाँ तक अपनी जान तक की परवाह नहीं करते और सत्य के मार्ग पर हमेशा चलते रहते हैं। वाणी में जैसा कि स्वामी जी ने लिखा है।

आज साँच कहना, सो तो,
काहू न रुचे तो भी कछू प्रकाशे सत।
सत के साथी को सत के बाण चुभसी,
दुष्ट दुखासी दुरमत॥

इस सत्य को जाहिर करने में स्वार्थी लोगों को बहुत कष्ट होता है। पर सत्य को सत्य ही प्यारा होता है तो ये सत्य क्या है जिसे जाहिर करने में अत्यन्त कठिनाई होती है तो वह है सत् चित आनन्द का एक अंग। सत्य की शक्ति का नाम ही सत्य है और जब-जब सत्य के अंगों ने इस सत्य को जाहिर करने की कोशिश की तो दुनियाँ के मतलबी लोगों ने उन्हें बहुत यातनायें दीं और यहाँ तक कि उन्हें अपनी जान भी गवां देनी पड़ी फिर भी वह सत्य के रास्ते से विचलित नहीं हुए। उदाहरण हमारे सामने हैं। सबसे पहले अरब में जब एक नहीं अनेक भगवान पूजे जाते थ और एक ही नहीं अनेक देवी देवताओं की पूजा की जाती थी और साथ ही अरब में लोग जानवरों की तरह रहते थे वह जानवरों को कच्चा ही खाया करते थे। मोहम्मद साहब ने आकर इन्हें एक खुदा की पहचान करवाई उन्हें इन्सानों की तरह रहना सिखाया इन्सानियत की पहचान करवाई तो दुनियाँ ने इसके

Nijanand App

साथ जो सलूक किया वह भी हमारे सामने है। इन्हें मक्का छोड़ मदीना जाना पड़ा और क्या-क्या न सहना पड़ा, परन्तु वह सत्य के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए क्योंकि उन्हें सत्य प्यारा था। सत्य कभी मिटता नहीं आज जब वह सत्य का कहने वाला इस दुनियाँ में नहीं है तो उसके कहे वचनों व उपदेशों की पूजा होती है। इसी तरह हमारे सामने दूसरा उदाहरण ईसा मसीह का है जिन्होंने दुनियाँ में सही मार्ग व धर्म को सत्यता का प्रकाश फैलाया लेकिन धर्म के ठेकेदारों ने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया और इनकी कुर्बानी ही दुनियाँ के सामने सत्य का उदाहरण बन गई जिसके पीछे आज दुनियाँ चल रही है। इन उक्त उदाहरणो को देखते हुए लगता है जब तक इस दुनियाँ में सत्यता से परिचित कराने वाला जीवित रहता है इसे एक साधारण इन्सान की तरह समझा जाता है और उसके द्वारा कहे गये वचनों की निन्दा की जाती है और जब वह शक्ति हमारे बीच में से चली जाती है, इसका मूल्य हमें तब पता चलता है। परन्तु सत्यता का प्रकाश इतना होता है कि सत्य छिपाये नहीं छिपता, मिटाये नहीं मिटता एक न एक दिन वह सूरज की भाँति निकल कर सबको प्रकाशित करता है और सूरज के निकलने के बाद अंधेरे का अन्त होता है। इसी तरह सत्य के जाहिर होने पर भी झूठ का अन्त अंधेरे की भाँति होता है। जैसे–राम के समय रावण का अन्त व कृष्ण का समय कंस के अन्त हुआ। सत्य के साथ आदि काल से ही झूठ जुड़ा हुआ है और हमेशा सत्य की जीत हुई है। झूठ की सदा से ही हार होती आई है और झूठ के एक नहीं अनेक रूप हैं। झूठ बनाया जाता है और जो चीज बनाई जाती है उसका अन्त होता है। जबकि सत् का रूप एक है और वह सदा अखंड और कायम है। जिसका कभी अन्त नहीं होता।

जब-जब इस धरती पर झूठ का बोलबाला बढ़ा है, इस धरती पर महापुरुष अवतरित हुए। कलयुग में जब स्वयं अक्षरातीत अवतरित हुए और सत्य को जाहिर करने के लिए निकले तो उन्हें किन मुसीबतों और मुश्किलों का सामना करना पड़ा जो सुन्दर साथ हर वर्ष बीतक सुनता है वह अच्छी तरह से जानता है कि स्वयं पूरण ब्रह्म को भी सत्य जाहिर करने के लिए क्या-क्या न सहना पड़ा। सत्य की राह काटों का मार्ग या तलवार की धार है। जिस पर साधारण व्यक्ति के चलने के बस की बात नहीं है। इस पर तो कोई विरले ही चलते हैं और हमारे सामने उदाहरण छोड़ जाते हैं। स्वामी जी ने भी सत्य की राह पर चलते हुए घर त्यागा, पत्नी को छोड़ा, वजारत छोड़ी और कहाँ–कहाँ तक काटों भरे रास्तों पर पद यात्रा की। लेकिन फिर भी स्वार्थी लोगों ने उन्हें नहीं छोड़ा और एक पल भी चैन से नहीं बैठने दिया। लेकिन स्वामी जी ने सत्य को जाहिर किया। जिस लोक लाज मर्यादा को दुनियाँ छोड़ नहीं सकती उसका परित्याग कर दुनियाँ से असल मार्ग सत्य के मार्ग पर चले क्योंकि वह स्वयं सत्य का स्वरूप थे और जिन दुःखों और मुसीबतों से दुनियाँ घबराती है और सुख को चाहत रखती हैं, स्वामी जी ने सुख को कभी नहीं चाहा–

और वाणी में कहा–

Nijanand App

दुःख तो हमारा आहार है,
औरन को दुःख खाए ।
दुःख के भागें सब फिरे,
कोई विरला साथ निभाय ।।

सत्य का साथ सत् के प्यारे या सत्य के अंग ही निभा सकते हैं, जिनका सम्बन्ध झूठी दुनियाँ से है या जिन्हें झूठी दुनियाँ प्यारी है । वह सत्य के मार्ग पर कभी नहीं चल सकते हैं और ये ही कहते सुना जाता है कि हमें क्या लेना देना इन बातों में पड़ कर क्यों अपनी घर गृहस्थी या अपनी दुनियाँ खराब करें, परन्तु हमें यह देखना है कि जिस घर के पीछे लगकर हम सत्य से मुँह मोड़ लेते हैं तो क्या ये घर परिवार या दुनियाँ वाले जो आज हमारे संगी है क्या ये कायम है या हम कायम हैं कि ये साथ हमारा आगे मरने के बाद भी निभाये वाणी में भी लिखा है ।

झूठा खेल कबीले झूठे,
झूठा झूठे बोले ।
खाए पीए पूजे झूठे,
झूठा-झूठा बोले ।।

जब ये सब झूठ है, तो क्यों हम इस झूठ के पीछे मरें यदि हम अपने आपको पूरण ब्रह्म के अंग मानते हैं, तो क्यों न इस सत्य के लिए मरे जिस तरह वह १२ मोमिन मरे पर उन्हें कुछ नहीं हुआ क्योंकि जो हक पर मरने के लिए तैयार हैं तो स्वयं हक भी इन पर उतना ही कुर्बान है ।

अब इस जागनी के ब्रह्माण्ड में धनी की वाणी, धनी के पैगाम को दुनियाँ के सामने जाहिर करने में हमें पीछे नहीं हटना है और अपने धनी को जाहिर करना है । ये ही सत्य की राह है । जिस पर हमको चलना है । हादी के कदमों पर कदम रख कर चलना है और जो हकीकत में श्री राज के अंग हैं । वह दुनियाँ से नहीं डरते और न ही मुसीबतों से घबराते हैं । वह सत्य के अंग सत्य को जाहिर करके ही रहते हैं क्योंकि सत्य की शक्ति का तेज इनके पास होता है और सत्य का बल उसमें होता है ।

आइये, अखिल भारतीय जागनी शिविर में

१-२-८८ से ७-२-८८ को

सपरिवार चलें

प्रणामी मन्दिर, लखनऊ